ऋग्वेद यजुर्वेद

वर्ष-१२ अंक-५
२७ जनवरी २०१६

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-१२ अंक-५

२७ जनवरी २०१६

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६

विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	**4**
भ्रान्ति निवारण	5
वेद	7
पशु–पक्षियों से सीखें	9
कर्त्तव्य की शिक्षा	11
महर्षि दयानन्द और आर्य समाज....	12
राष्ट्र धर्म प्रथम	15
धर्म का जन्म	16
पंजाब केसरी लाला लाजपतराय	18
चम्बल संभाग में किए गए प्रचार...	22
संगीतमयी वेदकथा का आयोजन	23
सिंहस्थ	24

फरवरी माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

2	भीष्म पितामह जयंती
8	गुरु गोलवलकर जयंती
13	पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्य तिथि
19	सरस्वती जयंती, बसंत पंचमी पर्व, सरोजनी नायडू, कवि निराला जयंती
19	शिँवाजी जयंती
24	शबरी जयंती
26	वीर सावरकर पुण्यतिथि
27	चन्द्रशेखर आजाद शहीद दिवस
28	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

सम्पादकीय :

आतंकवाद और निदान !

आतंकवाद आज पूरे विश्व की समस्या बन चुका है, जहां देखो वहीं इसका कहर हो रहा है। आतंक शब्द अपने आप में किसी अप्रिय विनाशकारी भावों को स्पष्ट करता है। किसी जमाने में दैत्य अथवा राक्षस नाम से जिन्हें जाना जाता था इस युग में उसी का प्रतिबिम्ब आतंकवाद के रूप में देखा जा रहा है।

आतंकवाद जिस तेजी से विगत 8–10 साल में बढ़ा है यदि उसी गति से आगे चलता रहा तो जनजीवन मुश्किल में पड़ जावेगा, सामान्य रूप से चलने वाली जीवन पद्धति छिन्न–भिन्न होकर अनिश्चित हो जावेगी। जन सामान्य की सम्पत्ति, परिवार व जीवन अदृश्य हाथों में गिरफ्त होकर भय के साये में दबा रहेगा। यह सब क्यों ? और इस नियन्त्रण कैसे पाया जा सकता है ? इस पर आज पूरे विश्व को विचार कर इसका स्थायी हल निकालना चाहिए।

कहा गया है अपराध करने वाले से अधिक दोषी अपराध सहने वाले को बताया गया है। इस दृष्टि से हमारी भूमिका अपराध सहने वालों में है। तो प्रश्न उठता है कि क्या हम दोषी हैं ? जी हां हम दोषी हैं। दोषी इसलिए हैं कि हम दब्बू, स्वार्थी, डरपोक बनकर यह सब चुपचाप सहन कर रहे हैं। हमने समाज के या राष्ट्र के दर्द को कभी अपना दर्द नहीं समझा। पड़ोसी के घर में लगी आग को हमने अपनी क्षति नहीं माना। भूल गए कि कभी हम पर भी ये मुसीबत आ सकती है।

कश्मीर सनातन धर्मियों से खाली हो गया, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड में भारत की मूल विचारधारा वाले अल्पसंख्यक बन गए, केरल में यही सब हुआ। बिहार, छत्तीसगढ़, नक्सली अत्याचारों को सहन कर रहा है। हमने कब इनको गंभीरता से लिया ? इसका एकमात्र कारण है राष्ट्रीय भावना का अभाव। समग्र देश और देशवासियों से हमारा वह रिश्ता नहीं है जो स्वजनों की अपनी सम्पत्ति के लिए होता है।

किसी एक स्थान पर होने वाले अत्याचार को हमने अपनी क्षति नहीं, उस क्षेत्र की क्षति माना, उसका परिणाम उन्हें भुगतने के लिए छोड़ दिया।

काश यह पूरा देश किसी एक दुर्घटना या आतंक के विरूद्ध एक आवाज में खड़ा हो जाता तो इस जहर को वहीं समाप्त कर दिया जाता।

इस गलती को मानसिक कमजोरी को जब तक पूरा देश दूर नहीं करेगा तब तक इस समस्या का स्थायी निदान नहीं हो सकता है।

दूसरा कारण हमारे अपनों से ही हमें खतरा है भाषा, प्रान्त, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय भावना का अभाव और निज स्वार्थ हेतु राष्ट्र में अव्यवस्था फैलाने वाली ताकतों का सहयोग। यह सब आस्तीन के सांप की तरह पल रहे हैं। चूंकि इस देश में रहते हुए ही वे इन गतिविधियों से जुड़े हैं, पता ही नहीं चल पाता कि किस पर भरोसा करें, किस पर नहीं। दोस्त और दुश्मन का अन्तर ही समझ में न आवें तो धोखा खाना तो स्वाभाविक है। क्योंकि –

ये देश कभी ना हारा, तीरों से, तलवारों से।
हानि उठाना पड़ी सदा, घर की दीवारों से।।

ये स्थिति सबसे खतरनाक है, बाहरी दुश्मनों से तो समाना किया जाना संभव है किन्तु जो अपने बनकर विश्वास में विष देने लगे तो क्या होगा। गालिब का शेर है –

गैरों से तमन्नाएं वफा क्या करना।
अपने वाले ही मिट्टी में मिला देते हैं।।

पठानकोट आतंकी हमले में कुछ इसी प्रकार की ध्वनि सुनाई पड़ रही है।

तीसरी सबसे दुखद स्थिति इस आतंकवाद को आश्रय देने के लिए वर्तमान राजनीति भी है। येन केन प्रकारेण अपना प्रभुत्व जमाने के लिए ऐसे कुछ समाजद्रोही पक्षों को आश्रय दिया जाता है। निर्वाचन के पश्चात फिर उन्हें अपने आका का पूर्ण आशीर्वाद व संरक्षण प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त दलगत, स्वार्थ से पूर्ण राजनीति ऐसी समस्याओं के समय राष्ट्रहित न देखते हुए सत्तारूढ़ दल के विरूद्ध मोर्चा खोल देती है। राजनेता ऐसे संवेदनशील अवसर पर भी राष्ट्रहित में लिए किए जाने वाले निर्णयों का भी विरोध करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। अपना राष्ट्रीय कर्तव्य भूलकर विरोध करने में ही अपनी विपक्ष की भूमिका निर्वाह करते हैं।

इससे राष्ट्र की आतंकवाद का विरोध करने, उससे निपटने की शक्ति में कमजोरी आती है देश एकजुट होकर खड़े होने के स्थान पर बट जाता है। इसका लाभ आतंकी व उनके एजेन्टों को मिलता है। आतंकवाद के खिलाफ उठाए जाने वाले कड़े कदमों का तथा कुछ संदिग्ध सूत्रों पर कड़ाई जब की जाती है तब पार्टी या साम्प्रदायिकता का राग अलापा जाने लगता है। इस प्रकार प्रशासन के कार्यों में अवरोध उत्पन्न किया जाता है।

शासन की भी कुछ कमजोरी है शासन दुष्टों के साथ और सज्जनों के साथ समान व्यवहार करके संभावित जन विरोध से बचना चाहता है। जबकि असामाजिक व राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को शक्ति के साथ कुचल देना चाहिए।

कहा गया, इन तीन की सफलता इसी में निहीत है, महिला में हो शरम, व्यापारी हो नरम और प्रशासन हो गरम।

किन्तु स्थिति ऐसी नहीं है। बड़े से बड़े अपराधी भी जेलों में पूर्ण सुख सुविधा प्राप्त कर लेते हैं। राजनीति संवरक्षण में दण्ड के स्थान पर राहत प्राप्त कर लेते हैं सरकार व प्रशासनिक ढ़ांचे की इस नीति से अपराधी बेखौप हो गए और जन सामान्य उनके इन कारनामों से भयग्रस्त हो गए। शासन की नीति सज्जनों को संवरक्षण सहयोग और दुष्टों के प्रति कठोर से कठोर दण्ड की होना चाहिए। तभी यह राष्ट्र अवांछित गतिविधियों और आतंकवाद नक्सलवाद जैसी गंभीर समस्याओं से मुक्त हो सकता है। इसलिए कहा गया, वैदिक संस्कृति का आदर्श है –

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्त्तते।

शस्त्रों से ही राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है।

भीष्म पितामह कहते हैं –

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः।

इदं शास्त्रमिदं शस्त्रं शापादपि शरादपि।। महाभारत

पहले शास्त्र, फिर शस्त्र। पहले प्यार, फिर तलवार। पहले वार्ता – ध्यान, फिर शर–सन्धान।

इस प्रकार इस आतंकवाद या राष्ट्रीय शत्रुओं के विरोध में प्रत्येक नागरिक, प्रशासन व राजनेताओं को अपने राष्ट्रीय धर्म का ईमानदारी से पालन कर एक स्वर में एक साथ इसके विरोध में खड़े होना चाहिए। तभी इसका अन्त संभव है।

धन्य

0 धन्य वे मनुष्य हैं जो अनित्य शरीर और सुख–दुःख आदि के व्यवहार में वर्तमान होकर नित्यधर्म का त्याग कभी नहीं करते।

– संस्कारविधिः, गृहाश्रमप्रकरणम

0 धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान लेकर जब तक विद्या पूरी न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे। – सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास

0 वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। – सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास

भ्रान्ति निवारण

प्रश्न 1 : ग्रन्थों के नामों के आधार पर "भ्रान्ति निवारण" और 'भ्रमोच्छेदन' दोनों एक से ही ग्रंथ प्रतीत होते हैं। एक ही ग्रंथ में सब भ्रान्तियों का उत्तर नहीं दे देना चाहिए था ?

उत्तर : ये दोनों ग्रंथ एक–दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। भ्रमोच्छेदन में पण्डित विशुद्धानन्दजी और राजा शिवप्रसादजी की नासमझी से अधिकांशतः ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से संबंधित कुछ प्रसंगों को स्पष्ट किया गया था। जबकि इस भ्रान्ति निवारण में वेदभाष्य संबंधी प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

प्रश्न 2 : ये प्रश्न क्यों उठाये गये थे ?

उत्तर : महर्षि दयानन्द ने संसार के उपकार के लिए सभी विद्याओं के मूलभूत वेदों के अर्थ प्राचीन ऋषियों की व्याख्या, निरूक्त तथा अन्य सत्य ग्रंथों के प्रमाणों के आधार पर करना प्रारंभ किया। ये अर्थ उस समय प्रचलित सायण आदि विदेशियों के द्वारा किये गये अर्थों से विरूद्ध थे तथा पौराणिकों के मतों का खण्डन इनसे स्वतः होता था। अतः लोगों को वेदों के ये गौरवशाली अर्थ रास नहीं आ रहे थे।

प्रश्न 3 : इस पुस्तक में जिन शंकाओं अथवा भ्रान्तियों का निवारण किया गया है, वे किसने उठाई थीं ?

उत्तर : इस पुस्तक में प्रस्तुत उत्तर कलकत्ता के संस्कृत कालेज के ऑफिशियेटिंग प्रिंसिपल पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न द्वारा उठाई गई भ्रान्तियों के हैं।

प्रश्न 4 : क्या उस समय केवल एक ही विद्वान था जिसने एतत्सम्बन्धी प्रश्न किये थे, अन्य किसी ने नहीं ?

उत्तर : ऐसा नहीं है। स्वामी जी इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि, इस वेदभाष्य के विषय में पहिले आर. ग्रिफिश साहब, सी. एच. टानी और पण्डित गुरूप्रसाद आदि पुरूषों ने कहीं–कहीं अपनी सामर्थ्य के अनुसार पकड़ की थी सो उनका उत्तर अच्छे प्रकार दे दिया गया था। वैसे महर्षि उस समय अपने बनाये मासिक अंकों में भी विद्वानों के समझने के लिए संकेत दे देते थे, जिससे उनको समझने में सुविधा हो और व्यक्तिगत रूप से बार–बार पूछने में महर्षि का अमूल्य समय बरबाद न हो।

प्रश्न 5 : जब महर्षि ने पहले शंकाओं का समाधान कर ही दिया था, तो फिर पुनः समाधान की क्या आवश्यकता थी ?

उत्तर : महर्षि भी बार–बार इन कामों में अपना बहुमूल्य समय खर्च नहीं करना चाहते थे, परन्तु दो बातों को लक्ष्य में रखकर उन्होंने पुनः लिखना आवश्यक समझा। महर्षि के शब्दों में 1. एक तो यह कि ईश्वरकृत सत्य विद्या पुस्तक वेदों

पर दोष न आवे कि उनमें अनेक परमेश्वर की पूजा पाई जाती है, और 2. दूसरे, यह कि आगे को मनुष्यों को प्रकट हो जाये कि ऐसे–ऐसे व्यर्थ कुतर्क फिर खड़े करके मेरा काल न खोवें।

प्रश्न 6 : इस पुस्तक में किस भाषा में शंकाओं का उत्तर दिया गया है ?

उत्तर : हिन्दी भाषा में ही सब शंकाओं का उत्तर है।

प्रश्न 7 : यह किस समय लिखी गई ?

उत्तर : इसका समय संवत् 1934, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया (2) तिथि है।

भ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1 : क्या भ्रमोच्छेदन भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित किसी ग्रंथ का नाम है ?

उत्तर : जी हॉ, भ्रमोच्छेदन नामक ग्रंथ भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया था।

प्रश्न 2 : यह ग्रंथ महर्षि ने कब लिखा था ?

उत्तर : यह ग्रंथ महर्षि दयानन्द ने संवत् 1937, ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि गुरूवार को पूर्ण किया।

प्रश्न 3 : यह किस भाषा में लिखा गया ?

उत्तर : यह हिन्दी भाषा में लिखा गया है।

प्रश्न 4 : इसमें किस प्रकार के भ्रम को दूर करने का प्रयास किया गया है ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द जी के अपने शब्दों में ही, अब जो राजा शिवप्रसाद जी ने स्वामी विशुद्धानन्दजी की सम्मति लिखी, ज्येष्ठ महीने में, निवेदन पत्र छपवा के प्रसिद्ध किया है, उसी के उत्तर में यह पुस्तक है।

प्रश्न 5 : ऐसा माना जाता है कि राजा शिवप्रसाद विद्वान थे ?

उत्तर : स्वामी दयानन्द जी की भी पहले यही धारणा थी और वे उनसे मिलना भी चाहते थे, परन्तु एकबार संवत् 1926, कार्तिक सुदी 14, गुरूवार के दिन अचानक कुछ समय के लिए स्वामी जी की उनसे बात हुई तो उनकी धारणा बदली। उनके शब्दों में, स्वामीजी ने लिखा शोक है कि जैसा मेरा प्रथम निश्चय राजा जी पर था वैसा उनको न पाया। राजा जी की वाचालता बहुत बड़ी और समझ अति छोटी देखी है।

प्रश्न 6 : फिर कम समझ वाले के लिए इस ग्रंथ की क्या उपयोगिता है ?

उत्तर : वस्तुतः स्वामी जी इसके माध्यम से स्वामी विशुद्धानन्दजी को चेताना चाहते थे। उनके अनुसार, राजाजी तो संस्कृत विद्या पढ़े ही नहीं तो उनके सामने यह लेख तो ऐसा ही है जैसे बहरे के सामने अत्यन्त निपुण गाने वाले का वीणा आदि बजाना।

वेद

– आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः, रोजड

प्रश्न 118 : वेद किसको कहते है ?
उत्तर : सृष्टि के आरंभ में ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान को वेद कहते हैं।
प्रश्न 119 : वेद कितने हैं ? और कौन कौन से ?
उत्तर : वेद चार हैं 1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद।
प्रश्न 120 : कौन कौन से चार ऋषियों को वेदज्ञान प्राप्त हुआ ?
उत्तर : 1. अग्नि, 2. वायु 3. आदित्य और 4. अंगिरा। इन चार ऋषियों को वेदज्ञान प्राप्त हुआ।
प्रश्न 121 : किन किन ऋषियों ने कौन कौन से वेद प्राप्त किये ?
उत्तर : ऋग्वेद को अग्नि ऋषि ने प्राप्त किया, यजुर्वेद को वायु ऋषि ने प्राप्त किया, सामवेद को आदित्य ऋषि ने प्राप्त किया और अथर्ववेद के अंगिरा ऋषि ने प्राप्त किया।
प्रश्न 122 : ईश्वर ने चार ऋषियों को वेद ज्ञान कब दिया ?
उत्तर : ईश्वर ने चार ऋषियों को सृष्टि के प्रारंभ में वेद ज्ञान दिया।
प्रश्न 123 : प्रत्येक वेद के अपने–अपने विषय क्या क्या हैं ?
उत्तर : 1. ऋग्वेद का विषय ज्ञान है। 2. यजुर्वेद का विषय कर्म है। 3. सामवेद का विषय उपासना है और 4. अथर्ववेद का विषय विज्ञान है।
प्रश्न 124 : चारों वेदों का ज्ञान सबसे पहले किसने प्राप्त किया ?
उत्तर : चारों वेदों का ज्ञान सबसे पहले ब्रह्मा ने प्राप्त किया।
प्रश्न 125 : ईश्वर ने चार ऋषियों को ही वेद ज्ञान क्यों दिया ?
उत्तर : ईश्वर ने चार ऋषियों को ही वेद ज्ञान इसलिए दिया क्योंकि वे सर्वाधिक पवित्रात्मा थे।
प्रश्न 126 : प्रत्येक वेद में कितने–कितने मन्त्र हैं और चारों वेदों में कुल कितने मन्त्र हैं ?
उत्तर : 1. ऋग्वेद में 10522 मन्त्र, 2. यजुर्वेद में 1975 मन्त्र 3. सामवेद में 1875 मन्त्र और 4. अथर्ववेद में 5977 मन्त्र हैं। चारों वेदों में कुल 20349 मन्त्र हैं।
प्रश्न 127 : वर्ण कितने प्रकार के हैं और कौन कौन से हैं ?
उत्तर : वर्ण चार प्रकार के हैं 1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य और 4. शूद्र।
प्रश्न 128 : ब्राह्मण वर्ण के कर्म क्या क्या हैं ?
उत्तर : वेद का पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना कराना, दान देना और लेना ब्राह्मण वर्ण के कर्म हैं।

प्रश्न 129 : क्षत्रिय वर्ण के कर्म क्या क्या हैं ?

उत्तर : राष्ट्र की सुरक्षा करना, न्याय प्रशासन आदि क्षत्रिय वर्ण के कर्म हैं।

प्रश्न 130 : वैश्य वर्ण के कर्म क्या क्या हैं ?

उत्तर : व्यापार, कृषि, पशुपालन आदि वैश्य वर्ण के कर्म हैं।

प्रश्न 131 : शूद्र किसे कहते हैं, इसका क्या कार्य होता है ?

उत्तर : जिसकी बुद्धि मन्द होती है तथा जो पढ़ लिखकर सभ्य, शिष्ट ज्ञानी नहीं बन पाता है और धन, विद्या से रहित होता है वह शूद्र कहलाता है। शूद्र का कार्य सेवा करना होता है।

प्रश्न 132 : मनुष्य जीवन को कितने आश्रमों में विभक्त किया गया है और वे कौन कौन से हैं ?

उत्तर : मनुष्य जीवन को चार आश्रमों में विभक्त किया गया है।

1. ब्रह्मचर्य 2. गृहस्थ 3. वानप्रस्थ 4. सन्यास आश्रम।

प्रश्न 133 : वेदांग कौन कौन से हैं ?

उत्तर : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योति I।

प्रश्न 134 : उपवेद कितने और कौन कौन से हैं ?

उत्तर : उपवेद चार हैं 1. आयुर्वेद 2. धनुर्वेद 3. गन्धर्ववेद 4. अर्थवेद

प्रश्न 135 : वैदिक दर्शन कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

उत्तर : वैदिक दर्शन 6 हैं – 1. योग दर्शन 2. सांख्य दर्शन 3. वैशेषिक दर्शन, 4. न्याय दर्शन 5. वेदान्त दर्शन और 6. मीमांस दर्शन।

प्रश्न 136 : वैदिक उपनिषद कितने हैं ? और कौन कौन से ?

उत्तर : वैदिक उपनिषद ग्यारह हैं उनके नाम इस प्रकार हैं – ईश, केन, कठ, मांडूक्य, मुण्डक, प्रश्न, ऐत्तरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक् और श्वेताश्वतर।

प्रश्न 137 : ब्राह्मण ग्रंथ किसे कहते हैं और उनकी संख्या कितनी है ?

उत्तर : वेद में वर्णित विषयें की व्याख्या करने वाले ग्रंथ ब्राह्मण ग्रंथ कहलाते हैं उनकी संख्या 4 है, 1. शतपथ ब्राह्मण 2. गोपथ ब्राह्मण 3. तोडय ब्राह्मण 4. एतरेय ब्राह्मण।

पशु पक्षियों से सीखें

– दिवंगत मनुदेव अभय

परमात्मा की चराचर सृष्टि में सभी प्राणी एक दूसरे पर निर्भर हैं। नीति के अनुसार दुरितों में भी गुणों का चयन करना मनुष्य की बुद्धि की विशेषता होती है। लोक–श्रुति के अनुसार सन्त एकनाथ ने 29 गुरू बनाये थे। आचार्य चाणक्य भी विभिन्न पशु–पक्षियों से 20 गुण ग्रहण करने की प्रेरणा दे रहे हैं। प्रस्तुत प्रकरण में इन्हीं 20 गुणों से संबंधित विचार प्रस्तुत है –

सिंहादेकं बकादेकं शिक्षेच्चत्वारिक कुक्कुटात्।
वायसात्पंच शिक्षेच्च षट् शुनस्त्रीणि गर्दभात्।।

भावार्थ – प्रत्येक प्राणी में कुछ न कुछ गुण अवश्य होते हैं। उन गुणों को ग्रहण कर मनुष्य को लाभ अवश्य उठाना चाहिए। आचार्य चाणक्य के अनुसार व्यक्ति को सिंह (शेर) और बुगले से एक–एक गुण सीखना चाहिए। मुर्गे से 4 गुण सीखने में संकोच नहीं करना चाहिए। काग (कौए) से 5 गुण सीखने के लिए सदैव तत्पर रहें। पूर्ण परिचित कुत्ते से छः गुण सीखने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

आइये देखें ! इन विभिन्न पशु–पक्षियों में ऐसे कौन–कौन से गुण हैं, जिनसे मनुष्य लाभान्वित हो सकता है।

सिंह – **प्रभूतं कार्यमल्पं वा यन्नरः कर्त्तुमिच्छति।**
सर्वारम्भेण तत्कार्यं सिंहादेकं प्रचक्षते।।

मनुष्य जो भी छोटी या बड़ा कार्य करे, उसे उसमें प्रारंभ से लेकर अन्त तक अपनी शक्ति लगाकर उसे सम्पन्न करना चाहिए। उसमें किसी प्रकार का प्रमाद–उन्माद नहीं करना चाहिए। सदैव स्मरणीय तथ्य यह है कि कोई भी कार्य न तो बुरा या छोटा होता है और न उपेक्षा योग्य होता है। कार्य की सफलता के लिए उसे पूरी शक्ति के साथ सम्पन्न करने की लगन मन में होनी चाहिए। शिकारी लोग भलीभांति जानते हैं कि सिंह पूरी शक्ति से एकाग्रमन होकर अपने शिकार पर झपटता है, यही उसकी सफलता का रहस्य है। मनुष्य को इस रहस्य को हृदयंगम करना चाहिए।

बगुला – **दन्द्रियाणि च संयन्य बकवत् पण्डितो नरः।**
देशं कालं बलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत्।।

कार्य की निश्चित सफलता के लिए मन का एकाग्र होना पहली शर्त है। बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वह सर्वप्रथम अपनी सभी इन्द्रियों की प्रवृत्तियों को अपने वश में कर कार्य की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करे। प्रवृत्तियों को अपने वश में कर कार्य की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करे। मन

एक समय में एक ही काम करता है, इसलिए दत्तवित्त होकर पूरे मनोयोग से समय के अनुरूप बगुले के समान अपने कार्य की सफलता के लिए सतत प्रयत्न, पुरूषार्थपूर्ण साधना में तल्लीन रहे। इतना होने पर भी क्या सफलता प्राप्ति में कभी सन्देह हो सकता है ?

प्रायः लोग धूर्तों को बगुला–भगत कहते हैं, परन्तु बगुले में जो एक महान गुण है, वह अनुकरणीय है। यह दृश्य प्रायः सभी ने देखा है कि बगुला जब मछली को पकड़ने के लिए अपनी एक टांग पर, शरीर को साधकर खड़ा होता है, तब उसे मछली के अतिरिक्त और कोई अन्य प्राणी दिखाई नहीं पड़ता, उसे तो बस मछली को चोंच में दबाने की ललक रहती है, उसकी सभी ज्ञानेन्द्रियां–कर्मेन्द्रियां एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सन्नद्ध रहती है। ठीक इसी तरह प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि जब वह किसी कार्य की सिद्धि के लिए, सफलता के लिए पूरी शक्ति के साथ, पूरी मनोयोग के साथ अपनी इन्द्रियॉं, अपने वश में कर ले। मन को इधर उधर भटकने देने की गुंजाइश नहीं होने देना चाहिए तथा बगुले के समान एक स्थान पर ही ध्यान केन्द्रित रखना अति श्रेयस्कर है। चित्त एक दिशा में, एक ही कार्य की पूर्ति में लगा देना चाहिए। तेल के कढ़ाव के ऊपर लटकी मछली की ऑंख में तीर मारने के पूर्व अर्जुन ने भी यही कहा था। मुझे केवल मछली की ऑंख के सिवा कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। उसने तन्मय होकर जो तीर छोड़ा तो वह उसकी ऑंख में ही सीधे लगा। वह सफल हो गया और उसके ल और यश में वृद्धि हो गई।

कुक्कुट (मुर्गा) – प्रत्यत्थानं च युद्ध च सं विभागं च बन्धुषु।
स्वयमाकम्य भुक्तं च शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात्।।

आचार्य चाणक्य के अनुसार उषाकाल में उठकर बॉंग देना, युद्ध के लिए सदा तैयार रहना, अपने बन्धु–बान्धवों को उनका उचित हिस्सा देना तथा अपने द्वारा स्वयं किया हुआ शिकार खाना, यह मुर्गे के सद्गुणों की ओर संकेत है।

प्रातः उषाकाल में उठकर ईश्वर–आराधना में धर्म और अर्थ के प्रति चिन्तन करना यह महान आप्त पुरूषों का गुण है। कहा भी गया है –

प्रातः समय की वायु को सेवन करत सुजान।
तासों छवि बढ़त हैं, बुद्धि होत बलवान।।

संस्कृत के एक कवि ने प्रातः की महिमा का उल्लेख करते हुए कितना ठीक कहा है – सूर्योदय से पूर्व जागने वालो का भाग्य जग जाता है और सूर्योदय के बाद आलसी, प्रमादि होकर उठने वाले का भाग्य भी सोता रहता है।

– शेष अगले अंक में ....

महर्षि दयानन्द के वाक्य –

कर्तव्य की शिक्षा

सूरत से चलकर नर्मदा के तट पर भगु आश्रम में आसन लगाया। भोजन के अनन्तर स्वामीजी अपने कर्मचारियों को भी विश्वास करने की आज्ञा देते थे। एक दिन एक विद्यार्थी स्वामीजी की ओर पैर करके सो गया। जब सब जगे तो स्वामीजी ने सबको अपने पास बुलाकर उपदेश दिया। प्रत्येक आर्य को आर्य मर्यादा का पालन करना चाहिये। बिना बुलायें बोलना, बड़ों की बातों में आप ही बोलने लगना, मर्यादा के विपरीत है। अपने माननीय विद्वानों की ओर पीठ करना और पांव करके सोना भी मर्यादा विरूद्ध है, विद्यार्थी गया स्वामीजी के प्रति नत मस्तक हुए।

एक दिन एक विद्यार्थी को पानी लाने को कहा – उसने कहा – मैं ब्राह्मण हूं मेरा काम पानी ढ़ोना नहीं है। तब स्वामी जी ने कहा कि जिसके समीप में रहता हो और जिससे विद्या ग्रहण करता है, उसके आदेश का पालन अवश्य करना चाहिये। उसकी आज्ञा कभी भी नहीं भंग करना चाहिये।

गुरू सेवा कैसे करनी चाहिये सुनो ! जब मैं मथुरा में अध्ययन करता था, तो मेरे ऊपर गुरूजी की असीम कृपा रहती थी इससे साथी चिढ़ते थे। उन्होंने गुरूजी से कहा दयानन्द बड़ा अवनीत् है। आपसे मीठी–मीठी बातें करता है, पीछे से ऑख बन्दकर लाठी लेकर चलता है मजाक उड़ता है। यह दुष्टों की चाल चल गई और स्वामीजी ने इतना मारा जिसके निशान अन्त तक रहे।

स्वामीजी ने परस्पर सेवा भाव और शिक्षा के उपदेश दिये। इस प्रकार गुजरात में विवेक के बीज बोकर अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया।

बसई में एक विद्यार्थी ने स्वामीजी की घड़ी चुरा ली फिर खोजकर चोर को पकड़ लिया। परन्तु उसे दण्ड न देकर स्वामीजी ने कहा –

हमारा काम सॉप को मारना है न कि उसकी बॉम्बी पीटना है। फिर चोर को स्वामीजी ने चोरी के दोष समझाये।

गाय माता की जय का और गौरक्षा का घोष तो अनेक करते हैं परन्तु गोवंश विकास व रक्षा किस प्रकार हो उस पर चिन्तन कर प्रयास नहीं करते।

गाय का दूध, दही, घी आदि का सेवन अधिक होने लगे तो गौ रक्षा स्वतः हो जावें।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां

यूं तो कितने ही महापुरूष हुए दुनियां में।
कोई गुरू देव दयानन्द सा देखा न सुना।।

यह पंक्तियां कोरी कल्पना नहीं है महर्षि के जीवन का यथार्त है। महर्षि के पराक्रम, विद्वता, साहस और कार्यों को देखकर किसी के मुख से ये उद्गार निकलना सहज होगा।

यह तो दुर्भाग्य है कि महर्षि की घोर तपस्या और बलिदान को उसकी योजना को समाज उतना नहीं समझ ही नहीं पाया।

जिस प्रयोजन के लिए यह सब हुआ था। सत्य सिर पर चढ़कर बोलता है, इसलिए महर्षि को उन व्यक्तियों ने जो सैद्धान्तिक रूप से भिन्नता रखते थे उन्होंने भी उन्हें उनके कार्यों को चरित्र को सराहा। कम से कम उस ऋषि के अपने को अनुयायी कहलाने वालों को इस पर पुनः चिन्तन करके महर्षि के त्याग तपस्या बलिदान का मूल्यांकन करना चाहिए। महर्षि के सपनों को भूलने के स्थान पर उन्हें पूर्ण करने हेतु प्रयत्न करना चाहिए। यही उस ऋषि के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है। महर्षि के संबंध में अनेक विद्वानों, नेताओं, विचारकों ने अपनी लेखनी से उनकी महानता का वर्णन किया है, उनमें से कुछ व्यक्तियों की भावना इस प्रकार प्रस्तुत की जा रही है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल :

यद्यपि मैं आर्य समाज का कोई विशेष चिन्ह नहीं लगाता तो भी मैं आर्य सज्जनों के समान ही स्वामी दयानन्द का भक्त हूं। हिन्दू समाज में जो त्रुटियां, कुरीतियॉ, अज्ञान और भ्रम थे, उन सबके विरूद्ध स्वामी जी ने धर्म युद्ध शुरू कर दिया था। अगर स्वामी जी न आते तो आज हिन्दू समाज का क्या हाल हुआ होता, इसकी कल्पना कीजिये।

वीर सावरकर

सचमुच स्वामी दयानन्द एक ऋषि, एक महान सुधारक और एक सच्चे देशभक्त थे।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी

भारतीय प्रगति के इतिहास के इस महान आपत्तिकाल में कुछ महान व्यक्ति प्रकट हुए जिनमें दयानन्द सर्वोच्च थे, जिन्होंने देश को उत्कृष्ट नेतृत्व दिया। दयानन्द सरस्वती का मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्राचीनता लिये हुए था। धार्मिक सच्चाईयों के नाम पर चलने वाले खोखले कर्मकाण्ड, अर्थहीन रीतिरिवाजों और भ्रान्तियों में उनका अन्धविश्वास न था। वे भारतीय जनता के सब हाथों में वेद

के लिए उपस्थित थे और अनेक जातियों और मत–मतान्तरों में विभक्त हुए पथ–भ्रष्ट लोगों को उन्होंने एक नया सन्देश दिया और सामाजिक क्षेत्र में हर प्राणी को पवित्रतम भारतीय परम्परा के अनुकूल समानता का अधिकार दिया।

साधु टी. एल. वास्वानी

मेरे निर्बल शब्द ऋषि की महत्ता का वर्णन करने में असक्त हैं। ऋषि के अप्रतिम ब्रह्मचर्य, सत्य संग्राम और घोर तपश्चर्या के लिए अपने हृदय के पूज्य भावों से प्रेरित होकर मैं उनकी वन्दना करता हूं।

मैं ऋषि को शक्ति–सुत अर्थात कर्मवीर योद्धा समझकर उनका आदर करता हूं। उनका जीवन राष्ट्रनिर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और माननीय है। दयानन्द उत्कट देशभक्त थे, अतः मैं राष्ट्रवीर समझकर उनकी करता हूँ।

श्री ऐंड्रयू जैक्सन डैविस

प्राचीन आर्स धर्म की अपने पुरातन यथार्थ स्वरूप में संस्थापना यह थी उस भट्टी की आग जिसे आर्य समाज कहा जाता है और जो परमात्मा के दिव्य पुत्र दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रदीप्त थी।

महर्षि जी के चरित्र की प्रशंसा भारतीय विद्वान तो करते हैं पर विदेशियों ने भी उनकी विद्वत्ता की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से की है। यथा –

श्री एस. ई. स्टोक्स

सब वर्णनों से, जो स्वामी दयानन्द के विषय में मिलते हैं। उनमें वे असाधारण शारीरिक शक्ति सम्पन्न प्रभावशाली व्यक्ति और महान संकल्पवान पुरूष सिद्ध होते हैं। उनकी विद्वत्ता सर्वसम्मत थी।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक पाल रिचर्ड

स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि था, सब पण्डितों ने उस पर पत्थर फैंके। उसने अपने में महान भूत और महान भविष्य को मिला दिया। वह तुम्हारे राष्ट्र को पुनर्जीवन देने आया था।

श्री जी. एम. अण्डेल

महर्षि दयानन्द ने भारतवर्ष और संसार मात्र की जो सेवा की है, उसकी मैं भली–भांति समझता हूँ। वे भारत वर्ष के सर्वोत्तम महापुरूषों से एक थे।

श्री फौक्सपिट जनरल सैकेटरी

मेरी राय में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगदगुरू और सुधारक थे।

मेजर टी. एफ. ओडोनल

जिन सिद्धान्तों का स्वामी दयानन्द ने प्रचार किया है, वे कुछ नये नहीं हैं। वे उतने ही प्राचीन हैं, जितना कि हिमालय। वस्तुतः वे सच्चे अर्थों में हमको फिर से वास्तविक प्राकृतिक नियमों की ओर ले जाना चाहते हैं और समस्त प्रकार की धोखेबाजी, मक्कारी, असत्यता और बनावटी बातों का बहिष्कार करना सिखाते हैं।

मिस्टर ए. ओ. ह्यूम

स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के विषय में चाहे कोई मनुष्य कैसी ही राय कायम कर ले, परन्तु यह सब को मान लेना पड़ेगा कि वे एक विशाल और श्रेष्ठ पुरूष थे।

प्रो. एफ. मैक्समूलर

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म सुधार का बड़ा कार्य किया और जहाँ तक समाज सुधार का संबंध है वे बड़े उदार–हृदय थे। उन्होंने वेदों पर बड़े–बड़े भाष्य किए, जिससे मालूम होता है कि वे संस्कृत से पूर्ण अभिज्ञ थे।

प्रिय पाठकगण,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रेरक प्रसंग :

राष्ट्र धर्म प्रथम

हमारे भारत देश के महान सन्त स्वामी रामतीर्थ जब जापान में थे, तो उन्हें एक विद्यालय के समारोह में बुलाया गया। स्वामी रामतीर्थ निर्धारित समय पर जब उस समारोह में पहुंचे, तो यहाँ उन्होंने अपने समीप खड़े एक तेरह वर्षीय बालक से पूछा – तुम्हारा धर्म क्या है ?

उस बच्चे ने जवाब दिया, श्रीमान जी, मेरा धर्म बौद्ध है।

स्वामी जी ने फिर पूछा – तुम बुद्ध को क्या समझते हो ?

बच्चे ने उत्तर दिया – जी बुद्ध, हमारे भगवान है।

अब स्वामी जी ने उस बच्चे से एक नया प्रश्न किया – तुम कनफ्यूशियन को क्या समझते हो ?

उस बच्चे ने इस बार उत्सुकता से स्वामीजी को देखा फिर उत्तर दिया – जी, कनफ्यूशियस चीन के एक महान सन्त हैं।

स्वामी रामतीर्थ का अब अगला प्रश्न था – अगर किसी दूसरे देश से तुम्हारे देश जापान को जीतने के लिए सेना आए और उनके कमाण्डर गौतम बुद्ध तथा जनरल कनफ्यूशियस हो तो तुम क्या करोगें ?

स्वामी रामतीर्थ जी का इतना कहना था, कि उस बच्चे का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा और उसने पूरे जोश के साथ जवाब दिया –अगर मेरे इस प्यारे देश को जीतने के लिए किसी दूसरे देश की सेना आये और उसके कमाण्डर गौतम बुद्ध तथा जनरल कनफ्यूशियस हो तो तैं क्या करूंगा। अरे, तब मैं अपनी तलवार से बुद्ध का सर घड़ से अलग कर दूंगा और जनरल कनफ्यूशियस को अपने पैरों से रौंद कर मौत के घाट उतार दूंगा।

स्वामी रामतीर्थ उस तेरह वर्षीय जापानी बच्चे के इस जवाब से दंग रह गये और आश्चर्य चकित होकर बोल पड़े, जिस देश में तुम्हारे जैसे बच्चों में इतने उंचे चरित्र एवं देशभक्ति का निर्माण हुआ हो, तो ऐसा देश एक दिन उन्नति की चोटी पर अवश्य ही पहुंचेगा और कभी भी किसी देश का गुलाम बन ही नहीं सकता।

श्रवण–चतुष्टय (चार प्रकार का श्रवण)

1. **श्रवण** – विद्वान से किये हुए उपदेश को शान्त होकर ध्यानपूर्वक सुनना।
2. **मनन** – एकान्त स्थान पर बैठकर सुने हुए का विचार करना और शंका होने पर पूछना और समाधान करना।
3. **निदिध्यासन** – सुनी और मनन की हुई बात को समाधि, ध्यान योग से देखकर उसकी सत्यता का निर्णय करना।
4. **साक्षात्कार** – पदार्थ के गुण, कर्म, स्वभाव की ठीक–ठीक जान लेना।

धर्म का जन्म – मधु वार्ष्णेय, कनाडा

धर्म का मूल ईश्वर है। इसकी उत्पत्ति प्राकृतिक आलौकिक शक्तियों में मनुष्य के विश्वास से होती है। धर्म का मूल बीज मानव-जाति जितना ही पुराना है। परमेश्वर ने धार्मिक ज्ञान मनुष्य को आदि सृष्टि में ब्रीज रूप में दिया, सृष्टि के धार्मिक विकास के इतिहास में कोई भी बदलाव नहीं देखा गया, और न ही कुछ नया विशेष अनुवेषण हो पाया है।

"किसी भी ज्ञान का उत्पादक जीव नहीं हो सकता। क्योंकि वह ईश्वर के समान अनन्त असीम नहीं और न ही किए कार्य का फल भोगने में स्वतन्त्र है।"

इस सत्य को सब मत–मतान्तर मानते हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, श्रेष्ठ है, दयालु है, सर्वशक्तिमान है और न्यायकारी है। विज्ञान ने चाहे जितनी भी उन्नति की हो पर हम ईश्वर के विषय में कुछ नया नहीं खोज पाए। संसार में प्रचलित सारी सत्य बातें वेद से निकली हैं भेद का कारण उनकी ग्रहण करने की क्षमता और वैदिक धर्म के अनुयायियों ने कर्मों के काण्ड में मनमानी कर स्वार्थ सिद्धि के लिये पशु बलि करवाना आरम्भ कर दिया तब अहिंसा का सहारा लेकर बौद्ध धर्म सामने आया और उस समय वैदिक धर्म में जो गिरावट आने लगी थी उसमें सुधार का प्रयोग किया। आज भी हिन्दुओं के पूर्वज आर्य कहे जाते थे वहां प्राचीन पारसी भी अपने को आर्य और अनार्य। वैदिक साहित्य में कहीं भी उपजातियों का वर्णन नहीं मिलता। केवल कर्म के आधार पर जाति को मानने से हिन्दू समाज के धार्मिक विकास में बिगड़ाव आया यही दोष नाशकारी लगा। वर्ण व्यवस्था का आधार व्यक्तिगत योग्यता थी वही रहती तो समाज टुकड़ों में न बटता है ना ही अनेकों धार्मिक सम्प्रदाय बनते।

वेद पर दोष लगाया है कि बहुदेव उपासना, तत्व और प्रकृति पूजा की शिक्षा देता है। इन्द्र, अग्नि, मित्र, वरूण, प्रजापति के भिन्न–भिन्न अर्थों को भली प्रकार नहीं समझा गया। जैसे इन्द्र (इति) ऐश्वर्य धातु से बना है जिसके तीन अर्थ हैं। कहीं सूर्य–प्रकाश ऐश्वर्य युक्त, राजा– लौकिक ऐश्वर्य युक्त, ईश्वर–अनुपम दोनों ऐश्वर्य युक्त। वेद मन्त्रों में ईश्वर को गुण और कार्यों के अनुसार बहुत नामों से पुकारा हैं। पर वह एक ही अजन्मा है। अनन्तर में पुराणिकों ने रूप ही अनेक बना दिये।

इन सबसे स्पष्ट है कि अर्थ को न समझ पाना ही असामनता का कारण बना। देव शब्द के द्वारा सबसे अधिक भ्रम फैला।

वैदिक धर्म की भांति बौद्ध धर्म भी अनादि और अनन्द सृष्टि के समर्थक हैं। वेद में मुक्ति को प्रकाशमय कहा है। सर्वथा पवित्र आत्मा ही ईश्वर का दर्शन करते हैं उनका सबसे उंचा प्रकाशमय लोक है। उससे नीचे स्वर्ग है जहां दयानन्द हैं।

ईश्वर की एकरूपता, इसी से सिद्ध है कि वेद ही सर्व धर्मो का मूल स्त्रोत है। काल बन्धन मुक्त ईश्वर, प्राचीन सभी ऋषियों का भी आचार्य है।

अभावों को कर दे विरान, वही तो इंसान है।

अभावों में गुजरती जिन्दगी से, आदमी के भाव का पता चलता है,
क्योंकि, कठिनाईयों के बीच जीवन जीना सबको खलता है।

इसलिए, अभाव में अक्सर नैतिक पतन का खतरा बन जाता है,
फिर दूर करने के लिए इसे व्यक्ति सारे हथकंडे अपनाता है।

पर, दुनिया अस्थिर है, सदा कुछ नहीं रहता,
जो जान लेता इस मर्म को, वह फिर नहीं भटकता।

सुख–दुःख दिन–रात, धूप–छांव है जो आते जाते हैं।
आस्तिक और ज्ञानी इससे, नहीं कभी घबराते हैं।।

अभाव असावधानी या पूर्व कर्मों का फल है
यह भी सत्य है, जो आज है वह नहीं कल है।

इस सत्य को स्वीकार कर जो चलते हैं।
उनसे अभाव के दुःख दूर रहते हैं

यही एक आस्तिक की है पहचान,
क्यों डरे, जब साथ है सर्वशक्तिमान।।

इस सोच से ही पहाड़ सा दुःख राई बन जाता है,
समझदार वही जो इस सूत्र को अपनाता है।

जो बीत गया और जो आने वाला है, उससे ज्यादा वर्तमान को संभालो।
अभाव में भी जिन्दगी को, हंसीन बना लो।

अभांव ही वह घड़ी है, जिसमें भावों की पहचान है,
अभावों को कर दे विरान, वही तो इंसान है।।

– प्रकाश आर्य, महू

28 जनवरी जिनकी जयन्ती है।

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

– कृष्णकान्त

भारत का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण बलिदानों का साक्षी है और उसी की एक कड़ी हैं, प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी लाला लाजपतराय। इन्हें पंजाब केसरी भी कहा जाता है। आपका जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके, पंजाब में हुआ था। लाला जी भारतीय राष्ट्रीय-कांग्रेस में प्रमुख नेता थे। बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल के साथ इस त्रिमूर्ति को लाल–बाल–पाल के नाम से जाना जाता था। इस त्रिमूर्ति ने ही सर्वप्रथम भारत में पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग की थी, कालान्तर में समूचा देश ही इनके साथ हो लिया। आर्य समाज से प्रेरित और समर्पित रहे क्रान्तिकारी लाला लाजपतराय ने ही महर्षि दयानन्द के साथ मिलकर "आर्य समाज" को पंजाब में जन–जन तक पहुंचाया। "लाला हंसराज" के साथ 'दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालयों' का प्रसार किया, जिन्हें आजकल डी.ए.वी. स्कूल एवं कॉलेज के नाम से जाना जाता है। अकालग्रस्त भारत में उन्होंने जगह–जगह शिविर लगाकर भी लोगों की सहायता की थी।

30 अक्टूबर 1928 को इन्होंने लाहौर के साइमन कमीशन के विरूद्ध आयोजित एक विशाल प्रदर्शन में भाग लिया, जिसके दौरान हुए लाठी चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गए। उस समय इन्होंने कहा था कि "मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत में एक–एक कील का काम करेगी। और हुआ भी वही....। लाला जी के बलिदान के अन्दर ही ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्यास्त हो गया। 17 नवम्बर 1928 को इन्हीं चोटों के कारण आपका देहान्त हो गया। लालाजी की मृत्यु से सारा देश क्रोध की अग्नि में दहक उठा। चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, पं. गयाप्रसाद शुक्ल एवं अन्य क्रान्तिकारियों ने लाला जी की मौत के प्रतिकार का निश्चय किया और 17 दिसम्बर 1928 को ब्रिटिश पुलिस के अफसर सांडर्स को गोली से उड़ा दिया। इसकी हत्या के मामले में ही 'भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू" को फांसी की सजा सुनाई गई। लालाजी ने शिवाजी, श्रीकृष्ण और कई महापुरूषों की जीवनियां लिखीं। उन्होंने देश में विशेषतः पंजाब में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में बहुत सहयोग दिया। देश में हिन्दी लागू करनें के लिए उन्होंने हस्ताक्षर अभियान भी चलाया था। अमर शहीद लाला लाजपतराय ने 'पंजाब नेशनल बैंक' तथा लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना की थी।

हे हिन्द केसरी ! हे अमर शहीद पंजाब केसरी। 'साईमन कमीशनों' सरीखे देशद्रोहियों से जूझने का साहस हमें प्रभु प्रदान करें। आपके जन्म दिवस पर यही कामना है। आपको शत्–शत् वन्दन।

– साभार जनज्ञान

आर्य समाज महू द्वारा आयोजित अनूठा कार्यक्रम
सप्तम गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज महू द्वारा आयोजित प्रति दो वर्ष में सम्पन्न होने वाले गायत्री महायज्ञ 25 से 31 दिसम्बर 2015 तक निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। यह सातवां प्रयास था, जिसका आयोजन नगर के मध्य स्थित इन्दिरा गांधी ग्राउण्ड टाउन हाल के पीछे महू में किया गया था। अनेक कार्यकर्ताओं तथा सहयोगियों के प्रयास का परिणाम था कि ईश्वर की कृपा से यह एक भव्य एवं विशाल कार्यक्रम, जनमानस पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ते हुए सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में महू नगर या आसपास के क्षेत्र के व्यक्ति ही सम्मिलित नहीं हुए अपितु प्रदेश के दूरदराज के क्षेत्र के भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर तथा प्रदेश के बाहर दिल्ली, राजस्थान, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, विदर्भ से भी कुछ महानुभाव केवल इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये आये थे।

कार्यक्रम के प्रचार व सूचना की दृष्टि से नगर व ग्रामीण क्षेत्र में कई वाहन गायत्री मन्त्र को बजाते हुए घूम रहे थे जिससे धर्मप्रेमी लाखों व्यक्तियों को गायत्री महायज्ञ के आयोजन की सूचना प्राप्त होती रही। इसके लिये महिला व पुरूष वर्ग की अलग अलग टीमें गांव गांव व घर घर जाकर गायत्री महायज्ञ का निमन्त्रण देते रहे। इस हेतु विभिन्न प्रकार की प्रचार सामग्री भी वितरित की गई।

दिनांक 25/12/2015 को प्रातः 8 बजे से आर्य समाज मन्दिर से एक भव्य शोभायात्रा प्रारंभ हुई जिसमें हजारों की संख्या में नागरिक उपस्थित हुए। आगे आगे गायत्री मन्त्र बजाते हुए बैण्ड बाजे तथा अश्व पर बैठे ओ3म् ध्वज लिये नवयुवक उसके पश्चात पं. राजगुरू शर्मा वैदिक छात्रावास महू के विद्यार्थी उसके पश्चात भजन प्रस्तुति का रथ, विभिन्न महापुरूषों की वेशभूषा में बैठे विद्यार्थी, उसके पश्चात कानड एवं शाजापुर से आये आर्यवीर दल के युवक जगह–जगह प्रदर्शन करते चल रहे थे, उसके पश्चात इन्दौर संयोगितागंज के नन्हें आर्यवीर जो शस्त्र प्रदर्शन करते चल रहे थे, उसके पश्चात सुसज्जित रथ पर यज्ञ करती गुरूकुल एवं आर्य शिक्षण संस्थान की कन्यायें उसके पश्चात बग्गी पर आचार्या नन्दिता जी शास्त्री उसके पश्चात पैदल चलते यात्री उसके पश्चात वाहन जुलूस एक किलोमीटर से भी लम्बा था। जगह जगह जुलुस का स्वागत किया गया। पूरे नगर में वैदिक धर्म का वातावरण निर्मित हो गया।

कार्यक्रम स्थल पर शोभायात्रा के पहुंचने पर ओ3म् ध्वजारोहण न्यायमूर्ति श्री वीरेन्द्रदत्तजी ज्ञानी द्वारा किया गया।

यज्ञशाला हमेशा की अपेक्षाकृत इस बार बड़ी और अत्यन्त आकर्षक बनी हुई थी जिसने भी यज्ञशाला को देखा वह उसकी तारीफ किये बिना नहीं रह सका। 11 कुण्डिय यज्ञशाला में प्रतिदिन 80 से 88 व्यक्ति बैठकर आहुति देते थे। यज्ञ की ब्रह्मा

आचार्या नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदा के द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। साथ ही मन्त्रपाठ के लिये गुरूकुल पाणिनि महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियां भी आई थी, जिनके द्वारा सस्वर वेदमन्त्रों का पाठ सुनकर एक आध्यात्मिक वातावरण स्वतः निर्मित हो रहा था। सैकड़ों लोग यज्ञ स्थल पर प्रातः उपस्थित होते और उसमें भाग लेते। अन्तिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति में लगभग 1000 से अधिक व्यक्तियों ने आकर अपनी आहुति दी तथा हजारों की संख्या में जन समूह उपस्थित था।

यज्ञ के पश्चात साध्वी उत्तमायतिजी के प्रवचन, भजन होते, जिसे बहुत ही आनन्द और श्रद्धा के साथ उपस्थित श्रद्धालु सुनते। इस बार यजमान के रूप में अनेक व्यक्ति पहलीबार यज पर बैठे और यज्ञ के प्रति उनमें एक भाव जाग त हुआ। कई लोगों ने नित्य यज्ञ करने का संकल्प लिया।

दोपहर वेद कथा मुख्य पाण्डाल बहुत ही आकर्षक व विशाल था वहां पर सम्पन्न होती थी प्रारंभ के दो दिनों में ठण्डा मौसम होने से उपस्थित कम रही किन्तु तीसरे दिन से उपस्थिति निरन्तर बढ़ती गई और बैठने की जो व्यवस्था थी छोटी व कम पड़ गई। कथा की वक्ता आचार्या नन्दिता जी ने मनुष्य जीवन से संबंधित जीवनोपयोगी निर्माण करके वेदों में उल्लेखित रहस्यों से जन साधारण को अवगत करवाया। कथा संगीतमय होती थी। बीच बीच में भजनों की प्रस्तुति से श्रोता झूम जाते थे।

सायंकालीन सत्र में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हेतु विद्वान आमन्त्रित किये गये थे जिनमें आचार्य सनतकुमार, श्री जगदीश शर्मा, आचार्य वागीशजी, स्वामी सुमेध ानन्द सांसद, वेदप्रताप वैदिक दिल्ली, डॉ सुरेन्द्र कुमारजी (कुलपति गुरूकुल महाविद्यालय, कांगड़ी) के व्याख्यान हुए। देर रात तक प्रबुद्ध नागरिकों ने तन्मयता से व्याख्यानों को सुना जिसका प्रभाव उनके मन मस्तिष्क पर पड़ा और सभी ने इसे खूब सराहा।

भजन की प्रस्तुति के लिए प्रमुख रूप से आमन्त्रित श्री मोहित शास्त्री, उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त श्री काशीरामजी अनल, महिपालजी, श्री कमल किशोर शास्त्री, विनोद, संजय आर्य, साध्वी उत्तमायतिजी आदि सहित अनेक भजनोपदेशक उपस्थित थे। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से 13 सन्यासी भी पधारे थे।

लगभग 8 बीघा जमीन में पाण्डाल, यज्ञशाला, प्रदर्शनी, भोजनशाला व दुकानों का निर्माण किया गया था। 25 दुकानें साहित्य, औषधि, अन्य सामग्री के विक्रय हेतु लगी थी। लाखों का साहित्य विक्रय किया गया, 15 वेद के सेट भी विक्रय किए गए। कार्यकम स्थल पर प्रदर्शनी का अपना एक अलग प्रभाव था, सैकड़ों पोस्टरों से भरी हुई प्रदर्शनी में आने वाले अक्सर प्रदर्शनी में लगे बोर्ड के वाक्यों को मोबाईल से कैमरे से कैद करते देखे गए तथा कागज पर लिखते देखा गया।

कार्यक्रम में नगर के अतिरिक्त महू क्षेत्र के ग्रामीण इलाके के व्यक्ति उपस्थित होते रहे। इसके अतिरिक्त इन्दौर, राउ, धार, सनावद की आर्य समाजों का भी विशेष सहयोग रहा। कार्यकम में आगन्तुक कई महानुभाव पूरे सात दिन

श्रोता के रूप में रहे तथा कार्यक्रम में कार्यकर्ता की दृष्टि से भी सहयोगी रहे। कार्यक्रम की यह भी विशेषता थी कि पूरे पाण्डाल में एक भी बीड़ी सिगरेट या तम्बाकू का पाउच पड़ा हुआ नहीं मिला। कार्यक्रम में उपस्थित होने वाला प्रत्येक सदस्य यज्ञ भजन प्रवचन या व्याख्यानमाला एवं प्रदर्शनी के माध्यम से कुछ न कुछ ऐसा प्राप्त कर रहा था जो उसके जीवन के लिये लाभकारी था।

भोजन व्यवस्था अत्यन्त व्यवस्थित और अभूतपूर्व थी, स्वादिष्ट भोजन प्रतिदिन बनता रहा, कोई भी व्यक्ति भोजन की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा।

इस अवसर पर कार्यक्रम को शोभा प्रदान करने हेतु आर्य समाज के पदाधिकारी व गणमान्य सदस्य भी पधारे थे। जिनमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्य नागरिक भी पधारे थे। श्री आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल उपप्रधान–सार्व. आ. प्र. सभा दिल्ली, श्री विनय आर्य उपमन्त्री–सार्व. आ. प्र. सभा दिल्ली, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान–आर्य प्रति. सभा दिल्ली, श्री ओमप्रकाश सामवेदी, हालैण्ड, श्री दलवीरसिंह जी राघव, श्री भगवानदासजी अग्रवाल, श्री रमेश जी गोयल, श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य, श्री मानसिंहजी यादव, श्री अतुलजी वर्मा, श्री गोविन्दजी आर्य, श्री दक्षदेवजी गौड़, श्री कमलेशजी याज्ञिक, श्री कैलाशनारायणजी उपमन्यु, श्री काशीरामजी अनल, श्री वेदप्रकाश सेण्डो, श्री जगन्नाथ सिंह जी, श्री दरबारसिंह, श्री डालूराम आर्य आदि पधारे थे।

निश्चित ही इस प्रकार के कार्यक्रमों से आर्य समाज को एक नई ऊर्जा प्राप्त हो सकती है। कम से कम संभाग स्तर पर ऐसा आयोजन होना चाहिए।

कार्यक्रम से प्रेरणा – कार्यक्रम में 90 प्रतिशत उपस्थिति पौराणिक सज्जनों की रहती। इस मध्य कार्यक्रम से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने गुटखा, तम्बाकू, सिगरेट तथा मांसाहार त्यागा। कुछ व्यक्तियों ने दैनिक यज्ञ करने का संकल्प लिया। वहीं कुछ लोगों ने अपने नाम के आगे जाति सूचक नाम के स्थान पर आर्य लिखने की घोषणा की। आगामी वर्ष इन्दौर में यही इससे भी बड़ा कार्यक्रम करने की घोषणा की गई है।

प्रकाश आर्य

संयोजक : गायत्री महायज्ञ समिति, महू

दान की भूमि की रजिस्ट्री

ग्राम आम्बादेव में सभा के नाम दान में प्राप्त भूमि की रजिस्ट्री भू सम्पत्ति अधिष्ठाता वेदप्रकाश आर्य द्वारा दान दाता से सभा के नाम सम्पादित करवाई गई। दानदाता श्री रघुनाथसिंह आर्य द्वारा अपनी स्वयं की क्रय की गई भूमि आर्य समाज के प्रचार प्रसार, विद्यालय, छात्रावास, प्रशिक्षण केन्द्र आदि की गतिविधियां संचालित करने की भावना से दान की घोषणा की थी। उसकी रजिस्ट्री करवाई गई। दानदाता को सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी व अन्य पदाधिकारियों ने धन्यवाद दिया।

चम्बल संभाग में किए गए प्रचार कार्यों का विवरण

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के उपप्रधान श्री मानसिंह यादव चम्बल संभाग एवं श्री केशवमुनि वानप्रस्थी के द्वारा माह सितम्बर 2015 से दिसम्बर 2015 तक किए गए प्रचार कार्यों का विवरण एवं मंचों का संचालन श्री सुदामामुनि एवं वदनसिंह, श्री बघेल शिक्षक के द्वारा किया गया।

1. 11 से 13 सितम्बर 2015 गोरमी जिला भिण्ड में आमन्त्रित विद्वानजन
प्रो. धर्मवीर जी, अजमेर (राजस्थान),
पं. नरदेवजी भजनोपदेशक, भरतपुर (राजस्थान)
श्री कुलदीप विद्यार्थीजी, बिजनोर (उत्तर प्रदेश)
स्वामी ओंकारानन्दजी, फरेरा (उत्तर प्रदेश)

2. 25 से 27 अक्टूबर 2015 आर्य समाज मुरैना शहर में मंच संचालन हेतु आमन्त्रित विद्वानजन
सुरेशचन्द्र शास्त्री (उपदेशक म.भा.आ. प्रति. सभा), महू, मध्य प्रदेश
आचार्य घनश्यामजी 'वैदिक प्रवक्ता',
श्री राजदेव आर्य भजनोपदेशक, शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश)
श्रीमती सन्तोषबाला आर्य भजनोपदेशिका, सोनीपत (हरियाणा)

3. 18 से 20 अक्टूबर 2015 आर्य समाज महिला मण्डल भिण्ड मंच संचालन श्री वदनसिंह वघेल। आमन्त्रित विद्वानजन
आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ आगरा (उत्तर प्रदेश)
आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री वैदिक प्रवक्ता, आगरा (उत्तर प्रदेश)
श्री ओमवीर आर्य भजनोपदेशक, बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश)

4. 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2015 आर्य समाज मोहनपुरा (गोरमी) भिण्ड आमन्त्रित विद्वान –
आचार्य विष्णुमित्र जी विद्यार्थी, नजीवाबाद (उत्तरांचल)
श्री कुलदीप विद्यार्थीजी, बिजनोर (उत्तर प्रदेश)
स्वामी ओंकारानन्दजी, फरेरा (उत्तर प्रदेश)

5. 14 से 17 नवम्बर 2015 आर्य समाज अकलोनी, गोरमी भिण्ड
आचार्य वीरेन्द्रजी शास्त्री, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
पं. नरेशदत्तजी भजनोपदेशक, बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
पं. कुशराम आर्य भजनोपदेशक, कन्नोज (उत्तर प्रदेश)

6. 23 से 25 नवम्बर 2015 आर्य समाज अटेर रोड भिण्ड मंच संचालन श्री बदनसिंह बघेल। आमन्त्रित विद्वान
स्वामी ओंकारानन्दजी, फरेरा (उत्तर प्रदेश)
श्री आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, आगरा (उत्तर प्रदेश)
पं. नरदेवजी भजनोपदेशक, भरतपुर (राजस्थान)

7. 24 से 27 दिसम्बर 2015 आर्य समाज, कनेरा जिला भिण्ड।
आमन्त्रित विद्वान –
आचार्य श्री विजयदेव नैष्ठिक, बदायूँ (उत्तर प्रदेश)
पं. नरेशदत्तजी भजनोपदेशक, बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
पं. रघुनाथजी वैदिक भूषण, एटा (उत्तर प्रदेश)

संगीतमयी वेदकथा का आयोजन

दिनांक 17 से 21 फरवरी 2016

कानड़ नगर में पहलीबार संगीतमयी वेदकथा का आयोजन आगामी दिनांक 17 से 21 फरवरी 2016 तक किया जा रहा है। इस हेतु एक समिति का भी गठन किया गया है। कार्यक्रम हेतु कानड़ के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में उत्साह है और इसमें पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

संगीतमयी वेदकथा की प्रस्तुति **श्री प्रकाशजी आर्य, महू** द्वारा की जावेगी। इस हेतु निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर इस कथा का लाभ लेवें।

विनीत :
काशीराम अनल, दरबारसिंह आर्य
एवं सदस्य वेदकथा समिति, कानड़ नगर

शोक संवेदना

सभा प्रधान इन्द्रप्रकाश गांधी जी के बड़े पुत्र श्री सुधीर गांधी का दिनांक 19.12.2015 को शिवपुरी में आकस्मिक निधन होने से गांधी परिवार सहित शिवपुरी नगर में शोक की लहर दौड़ गई। उनके आकर्षक व्यक्तित्व से सभी प्रभावित व परिचित थे, अंतिम यात्रा में जनसैलाब उमड़ पड़ा, सुधीर गांधी अपने पीछे दो पुत्रियों सहित अर्द्धांगनी को वियोग में छोड़कर गये। ईश्वर की व्यवस्था के समक्ष नतमस्तक होते हुए, सभा सुधीर गांधी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनके परिवार को यह दु:ख व वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ

दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई 2016 तक

मान्यवर,

भारत वर्ष में कुंभ और सिंहस्थ के नाम पर संभवतः ये विश्व के सबसे बड़े आयोजन होते हैं। जिसमें एक माह तक करोड़ों की संख्या में जन मानस का अपना जाना होता है।

हम प्रयास करके भी कभी इतनी बड़ी संख्या एकत्रित नहीं कर सकते। यह हमारी बात, वैदिक सिद्धान्तों को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा समय है। इस बार 21 अप्रेल से 21 मई तक एक नहीं दो स्थानों पर पांडाल लगाकर वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। इसके द्वारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम आने वाली इतनी बड़ी संख्या में से लाखों व्यक्तियों तक अपनी बात पहुंचावेगें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसे ही अवसर पर कुंभ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी।

भव्य यज्ञशाला, प्रवचन, व्याख्यान, भजन की प्रस्तुती, विशाल प्रदर्शनी, विचार चैनल के माध्यम से लघु फिल्म शो, विक्रय हेतु अनेक स्टॉल, वैदिक विचारधारा का निःशुल्क साहित्य वितरण, बाहरी साज सज्जा यह सबकुछ अभूतपूर्व करने का प्रयास प्रारंभ हो चुका है।

किन्तु हम सबका सहयोग ही इस पवित्र वेद प्रचार के भव्य आयोजन को सफल बना सकता है।

अतः कृपया सभी इस पवित्र कार्य में अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम हेतु आवश्यक सुझाव भी आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन के पते पर भेज सकते हैं।

सभी दान राशि **"सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति"** के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भेजें।

SBI A/c No. 35072661286 IFS Code : SBIN0000492

दान राशि खाते में जमा कर या जमा स्लीप पर अपना नाम, स्थान एवं पता लिखकर फोटो कॉपी भिजवायें।

Email : aryasmjujnkumbh2016@gmail.com

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी	**लक्ष्मीनारायण पाटीदार**	**वेदप्रकाश आर्य**
सभाप्रधान	संयोजक	कोषाध्यक्ष
म.भा.आ.प्रति.सभा	वैदिक धर्म प्रचार समिति	वैदिक धर्म प्रचार समिति
9425137097	**9827078880**	**9425930484**

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

|| ओ३म् ||

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

|| ओ३म् ||

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-71062